श्री अभिनंदननाथ विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा० ब्र० संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री अभिनंदननाथ विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना Mob.-9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख–मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥ 8 ॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥ 9 ॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ–बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि–सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री अभिनन्दननाथ विधान

जय बोलिये

हम सबके दर्शनीय,
हम सबके वंदनीय,
हम सबके अर्चनीय,
हम सबके पूजनीय,
हम सबके अभिनन्दनीय,
परमपूज्य

श्री अभिनन्दननाथ भगवान् की जय॥

भजन

(लय : जहाँ डाल-डाल पर)

हुए अभिनन्दन प्रभु के दर्शन तो, दर्शन किसके करना[2]
बस, चरणों में सर धरना॥
हे नाथ! भक्त पर करुणा करके, नजर दया की करना।
बस हाथ शीश पर धरना॥
हे धर्मधुरंधर! हे तीर्थंकर! लोकालोक निहारी[2]
हो विश्वशांति के मुक्तिदूत तुम, जय हो नाथ तुम्हारी[2]
जय हो नाथ तुम्हारी॥
हे मृत्युंजय! अब हम सब पायें, नाथ आपकी शरणा।
फिर जीना क्या, क्या मरना॥
हे नाथ! भक्त पर...॥ 1॥
हे नाथ! आप पावन पूजित हो, अर्हत् राम रमैया[2]
प्रभु! जन्म मृत्यु दोनों ही तट से, पार लगाते नैया।
पार लगाने नैया॥
हे करुणा! के मीठे सागर, अब हमको पार उतरना।
सो हममें अमृत भरना॥
हे नाथ! भक्त पर...॥ 2॥
जब मिट्टी सान रही मिट्टी को, मिट्टी के दलदल में[2]
तब अजर अमर अविनाशी चेतन, चीख रही पल-पल में॥
चीख रही पल-पल में।
तो चाक-चाक पर ढोल-ढोलकर, कैसे 'सुव्रत' तरना।
प्रभु निज सम हमको करना॥
हे नाथ! भक्त पर...॥ 3॥

श्री अभिनन्दननाथ विधान

स्थापना

अभिनन्दन प्रभु की यहाँ, गूँजी जय-जयकार।
पूजन के पहले करें, नमोस्तु बारम्बार॥

(सखी)

हे परम पूज्य प्रभुवर जी! श्री अभिनन्दन जिनवर जी!
तुम हो देवन के देवा, हो भक्तों के शिवपुर भी॥
तुमने गुण वंदन करने, चंचल मन-बंदर छोड़ा।
फिर ले रत्नत्रय घोड़ा, जग का आक्रन्दन तोड़ा॥

हम हैं संसारी प्राणी, भव-आकन्द्रन में चीखें।
क्या वंदन नंदन होता, यह पाठ कभी न सीखें॥
फिर भी अब उमड़ी भक्ति, सो पुलकित-पुलकित होके।
हम आज रचायें पूजा, बस भक्त आपके होके॥

कर्मों के बंधन सारे, जग-आक्रन्दन दुखियारे।
सब संकट विकट समस्या, हर विघ्न कष्ट के नारे॥
बस नाम आपका सुनके, निर्बन्ध बने, सब साथी।
तब ही अभिनन्दन प्रभु के, हम भक्त बने बाराती॥

मन वृन्दावन में वसो, अभिनन्दन भगवान्।
भक्ति छाँव में चेतना, पाये चित्-विश्राम॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं.......)

जिनसे हमको दुख होते, वो बीज रोग के बोते।
हम उनको अपना मानें, जिनसे तो चेतन रोते॥

यह मिथ्या बुद्धि हरण को, दो शुद्ध आत्म जल स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं.....।

हम राग-द्वेष ज्वाला से, संतप्त हुये पल-पल में।
फिर चाह दाह से जलकर, मिल बैठे भव दल-दल में॥
अब शीतल चंदन जैसा, ज्ञानामृत गुण दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं.....।

अब तक हमने जो पाया, कर तू-तू मैं-मैं उसमें।
जग क्षण भंगुर ना समझा, सब क्षत-विक्षत है जिसमें॥
अब शाश्वत अक्षत बनने, जिन रूप मिले बस स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

जब काम शील धन लूटे, हम मौन खड़े शरमायें।
तब लुटे-पिटे निर्बल हो, जिन ब्रह्म देख खिल जायें॥
हैं भक्ति पुष्प प्रभु अर्पित, संयम सौरभ दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

पर द्रव्यों के सब व्यंजन, चखकर बीमार हुये हम।
निज आत्म सौख्य क्या होता, यह चख न सकी ये आतम॥
नैवेद्य करें हम अर्पण, जिन वचन दवा दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं.....।

अज्ञान मोह आँधी से, प्रभु भक्ति दीप बुझ जाता।
फिर ज्ञान ज्योति बिन आतम, परतत्त्व प्रशंसा गाता॥
जन तजने जिन बनने को, जिन भक्ति दीप दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....।

कर्मों से बँधकर चेतन, हा! बिलख-बिलख कर विसरे।
जिन रूप सहारा लेकर, चारित्र धारकर निखरे॥
यह भक्ति धूप है अर्पण, शुभ ध्यान धूप दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

हम अशुभ पाप दुख करके, शुभ पुण्य कर्म सुख चाहें।
सो सुख नहिं हो दुख हो फिर, नहिं मिले मोक्ष की राहें॥
हमें अपने पास बुलाकर, जिन परिणति फल दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

पर परिणति के लालच में, अनमोल रत्न न समझे।
जिन दर्श आपके कर हम, अनमोल आत्म को समझे॥
गर कृपा आपकी हो तो, वह प्राप्त करें हम स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पञ्चकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

शुक्ला छट वैशाख को, विजय स्वर्ग तज पाए।
सिद्धार्था के गर्भ में, अभिनन्दन प्रभु आए॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

माघ शुक्ल बारस जहाँ, जन्मे नन्दननाथ।
पिता स्वयंवर के यहाँ, किए पर्व सुरनाथ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

द्वादश शुक्ला माघ में, बंधन क्रन्दन छोड़।
दीक्षा ले नंदन जिन्हें, वंदन हो सिर मोड़॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पौष शुक्ल चौदश मिली,निज निधि केवलराज।
जय हो अभिनन्दन विभो, नमन आपको आज॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लचतुर्दश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

छठी शुक्ल वैशाख को, गये मोक्ष के धाम।
नंदनप्रभु गिरिराज को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठ्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जयमाला

(दोहा)

सत्य वचन से सिद्ध जो, अभिनन्दन जिनराज।
आनंदित नत हो कहें, जयमाला हम आज॥

(ज्ञानोदय)

जिनकी जीवन रेखा टूटे, मुरझायी हो जीव लता।
घोर उदासी के बादल में, जिनको जाये मौत सता॥
रोग कष्ट से जो व्याकुल वो, भजकर अभिनन्दन प्रभु नाम।
हों मृत्युंजय सुन्दर सुखिया, अतः नमोस्तु हो अविराम॥ 1॥

एक महाबल सुन्दर राजा, धन-वैभव जिसका भारी।
चारों वर्णों का भी रक्षक, न्याय पुण्य गुण यश धारी॥
बहुत काल भोगों में गुजरा, किन्तु तृप्त जब नहीं हुआ।
तो वैराग्य धार मुनि बनकर, शाश्वत आतम रूप छुआ॥ 2॥

सोलहकारण भावनाएँ भा, तीर्थंकर पद बन्ध किया।
अगले भव में अभिनन्दन प्रभु, बनने का अनुबन्ध किया॥
तजकर देह अनुत्तर पहुँचा, जहाँ भोग स्वीकार किए।
फिर जिन-भक्ति सहित सुर तजकर, धरती पर अवतार लिए॥ 3॥

माँ ने सोलह स्वप्न देखकर, जिनवर को सिर टेक दिया।
जन्म त्रिलोकीनाथ लिए जब, इन्द्रों ने अभिषेक किया॥

नाम आपका अभिनन्दन रख, लगा टक टकी ताक रहे।
बना हजारों, नयन भुजायें, करके ताण्डव नाच रहे॥ 4॥

कुमारकाल दशा गुजरी तो, राज्य तुम्हीं को पिता दिए।
तुम्हीं राज्य उपभोग करो फिर, पिता स्वयं वैराग्य लिए॥
राजा बनकर राज्य प्रजा को, सुखी गुणी सम्पन्न किया।
तभी आपको बनते मिटते, मेघ महल ने खिन्न किया॥ 5॥

विनाशीक भोगों का वैभव, नष्ट हमें भी कर देगा।
पला-पुसा यह शरीर हमको, नगर-नारि सम तज देगा॥
हुये विरागी तो लौकान्तिक, देवों ने आ पूजा की।
बैठ हस्तचित्रा शिविका में, वन में जा जिन-दीक्षा ली॥ 6॥

ज्ञान मनःपर्यय झट प्रकटा, गये अयोध्या अगले दिन।
इन्द्रदत्त राजा ने विधिवत्, किया भक्ति से पड़गाहन॥
निरंतराय आहार हुए तो, नभ में जय-जय देव कहें।
अहो! दान यह अहो! पात्र यह, दाता को भी धन्य कहें॥ 7॥

मन्द-मन्द महकी वायु फिर, रत्न पुष्प नभ से बरसे।
ढोल नगाड़े नभ में गूँजे, जिससे भू-अंबर हरसे॥
खाद्य वस्तु अक्षीण यही तो, पंचाश्चर्य कहे जय-जय।
वर्ष अठारह मौन धारकर, बिता दिया छद्मस्थ समय॥ 8॥

दीक्षावन में असन वृक्ष के, नीचे आतम ध्यान हुआ।
बेला लेकर साँयकाल में, प्रभु को केवलज्ञान हुआ॥
दिव्य अर्चना कर देवों ने, समवसरण फिर सजा दिया।
जिस पर कमलासीन आपने, बिगुल धर्म का बजा दिया॥ 9॥

धर्मवृष्टि कर आर्य खण्ड का, प्रभु ने कण-कण शुद्ध किया।
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, मासिक योग निरोध किया॥

प्रातःकाल बहुत मुनियों के, साथ परमपद प्राप्त किया।
सिद्ध बने लोकाग्र विराजे, जीवन मरण समाप्त किया॥ 10॥

भक्ति सहित अभिनन्दन प्रभु का, इन्द्रों ने गुणगान किया।
मना मोक्षकल्याणक सादर, स्वर्ग लोक प्रस्थान किया॥
ऐसे वृषभनाथ जिनवर के, वंशज अभिनन्दन स्वामी।
निश्चयनय व्यवहार धर्ममय, मुक्त जिन्हें हम प्रणमामि॥ 11॥

ऐसे अभिनन्दन जिनवर जी, भव का वैभव हरण करें।
खुद निर्भय भय हरें हमारा, हम तो सादर चरण पड़ें॥
इनको गुरुग्रह तक सीमित कर, हो जाता है पाप महान्।
जिनका केवल सुमरण करना, रिद्धि-सिद्धि दे हर वरदान॥ 12॥
अब तक हमने की मनमानी, बात आपकी ना मानी।
नादानी से मुक्ति रिसानी, मिली कृपा ना वरदानी॥
अब तो स्वामी क्षमादान दो, दया कृपा करुणा कर दो।
विनाशीक से अवनाशी कर,'सुव्रत' की झोली भर दो॥ 13॥

(दोहा)

शोभित बन्दर चिह्नमय, प्रभु अभिनन्दननाथ।
दिव्य भव्य गुण पा सकें, अतः नमें हम माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं.....।

अभिनन्दनस्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, अभिनन्दन जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(श्रावक की 11 प्रतिमा वर्णन)

(नरेन्द्र)

सभी व्यसन सब शहद त्याग कर, अष्ट मूलगुण धारें।
निशि भोजन तज मर्यादित कर, भव तन भोग निवारें॥
शुद्ध बनें सम्यग्दर्शन से, शरण पंच गुरु की लें।
दर्शन प्रतिमा का स्वरूप यह, सम्यग्दृष्टि भी लें॥

(दोहा)

अभिनन्दनप्रभु दीजिए, निष्ठा भरा मुकाम।
मिले स्वरूपाचरण सो, बारम्बार प्रणाम॥ 1॥

ॐ ह्रीं प्रतिमादोषविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पाँचों अणुव्रत तीनों गुणव्रत शिक्षाव्रत भी चारों।
बारह व्रत ये व्रत-प्रतिमा के, सल्लेखनमय धारो॥
निरतिचार सल्लेखन करके, मृत्यु महोत्सव कीजे।
सात-आठ भव में फिर जल्दी, मोक्ष लक्ष्मी लीजे॥
अभिनन्दनप्रभु दीजिए, सुव्रत भरा मुकाम।
मिले स्वरूपाचरण सो, बारम्बार प्रणाम॥ 2॥

ॐ ह्रीं मृत्युभयविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

आर्त्तरौद्र का ध्यान त्यागकर, संयम भाव बनाना।
बिम्ब, पंचपरमेष्ठी, आतम, बारह भावन भाना॥
तीन संधि में समता धरकर, विधिवत् ध्यान लगाना।
ये सामायिक प्रतिमा जिससे, अपना वैभव पाना॥
अभिनन्दनप्रभु दीजिए, स्वानुभूति मुकाम।
मिले स्वरूपाचरण सो, बारम्बार प्रणाम॥ 3॥

ॐ ह्रीं मनोविकारविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पर्व अष्टमी चतुर्दशी को, प्रोषध, धर्म कहेगा।
इनमें अपना बल न छिपाकर, जो उपवास करेगा॥

प्रोषधोपवास वह प्रतिमा, आरम्भादिक टाले।
तत्त्वज्ञान कर आत्मध्यान कर, जिनवर के गुण गाले॥
अभिनन्दनप्रभु दीजिए, आतम ध्यान मुकाम।
मिले स्वरूपाचरण सो, बारम्बार प्रणाम॥ 4॥

ॐ ह्रीं संधिदोषविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जल फल आदिक जीव रहित कर, प्रासुक कर जो खाले।
प्राणी संयम पले न लेकिन, इन्द्रिय संयम पाले॥
यही सचित्त त्याग प्रतिमा जो, करे साधना ऐसी।
वो ही शीघ्र सकल संयम ले, उसे झिझक फिर कैसी॥
अभिनन्दनप्रभु दीजिए, प्रासुक देह मुकाम।
मिले स्वरूपाचरण सो, बारम्बार प्रणाम॥ 5॥

ॐ ह्रीं यम-नियमदोषविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कृत कारित अनुमोदन करके, चार तरह का भोजन।
करना नहीं कराना निशि में, तजना दिन में मैथुन॥
रात्रिभुक्ति त्याग प्रतिमा इससे, चेतन भोग मिलेंगे।
शील स्वभाव मिलेंगे अपने, आतम बाग खिलेंगे॥
अभिनन्दनप्रभु दीजिए, प्रासुक देह मुकाम।
मिले स्वरूपाचरण सो, बारम्बार प्रणाम॥ 6॥

ॐ ह्रीं आहार मैथुनदोषविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कृतकारित अनुमोदन एवं, मनो वचन काया से।
नव कोटी से मैथुन तजना, निज-नारी छाया से॥
ब्रह्मचर्य प्रतिमा यह सप्तम, अपनी सैर कराये।
मोक्ष नगर बारात चले फिर, मुक्ति विवाह कराये॥
अभिनन्दनप्रभु दीजिए, आतम शील मुकाम।
मिले स्वरूपाचरण सो, बारम्बार प्रणाम॥ 7॥

ॐ ह्रीं समस्तविधस्त्री उपसर्गविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिसमें षट्कायों की हिंसा, कह आरम्भ उसे तो।
षट् कर्मों व्यापार नौकरी, में आरम्भ तजे जो॥
तज न सके पूजन भोजन की, जो आरम्भी हिंसा।
वह आरम्भ त्याग प्रतिमा जो, ब्याज बैंक बैलेंस ना॥
अभिनन्दनप्रभु दीजिए, हिंसा रहित मुकाम।
मिले स्वरूपाचरण सो, बारम्बार प्रणाम॥ 8॥

ॐ ह्रीं विश्वहिंसादोषविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूजन के बर्तन कपड़े या, शौच-उपकरण जो हैं।
इन्हें बचा सब परिग्रह छोड़े, परिग्रह त्यागी वो हैं॥
ये परिग्रह त्याग प्रतिमा जो, संतोषामृत दे दे।
हे! प्राणी क्यों जग में उलझे, प्रतिमा व्रत तू ले ले॥
अभिनन्दनप्रभु दीजिए, विकसित उच्च मुकाम।
मिले स्वरूपाचरण सो, बारम्बार प्रणाम॥ 9॥

ॐ ह्रीं नवग्रह विभ्रम विनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सांसारिक कार्यों की अनुमति, जिस जन की ना होती।
घर में रहकर हुई परीक्षा, जंगल में क्या होती॥
यही अनुमति त्याग प्रतिमा जो, घर में भी रह पाले।
आगे वह मुनि या आर्या बन, भव से पिण्ड छुड़ा ले॥
अभिनन्दनप्रभु दीजिए, शिव लोकाग्र मुकाम।
मिले स्वरूपाचरण सो, बारम्बार प्रणाम॥ 10॥

ॐ ह्रीं आज्ञा ऐश्वर्यदोषविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्ण रूप से जो घर तजकर, मुनि समूह में जाये।
अणुव्रत को ले करे तपस्या, भिक्षा भोजन खाये॥
ऐलक क्षुल्लक और क्षुल्लिका, पिछी कमण्डलधारी।
वो उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा जो, बनवा दे अनगारी॥

अभिनन्दनप्रभु दीजिए, अपना मोक्ष मुकाम।
मिले स्वरूपाचरण सो, बारम्बार प्रणाम ॥11॥

ॐ ह्रीं यात्रादोषविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(श्रमण के तेरह प्रकार का चारित्र वर्णन)

कृत कारित अनुमोदन एवं मन वच तन नव कोटी।
षट्-कायों पर जीव दया कर, क्रिया त्यागना खोटी॥
पर की पीड़ा अपनी पीड़ा, मान चले जो स्वामी।
वही अहिंसा महा-महाव्रत, धर्म नींव शिवधामी॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिए, हम पर अपनी छाँव।
मिले अहिंसा महाव्रत, अतः पड़ें हम पाँव॥ 12॥

ॐ ह्रीं द्रव्य भावहिंसाविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

क्रोध लोभ भय हास्य आदि से, झूठ वचन नर बोले।
ऐसी वाणी कभी न बोलें, जिससे प्राणी रोले॥
नव कोटी से झूठ त्यागना, मौन धरे या साँचा।
सत्यमहाव्रत धरकर अपना, चेतन सुख से नाँचा॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिए, हम पर अपनी छाँव।
सत्य महाव्रत धर चलें, अतः पड़ें हम पाँव ॥13॥

ॐ ह्रीं कलहमूल-असत्यदोषविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

बिन स्वामी की गिरी पड़ी या, वस्तु रही जो भूली।
उसे न लेना चाहे अपनी, लग भी जाये शूली॥
मिली वस्तु में खुश रहना यह, अचौर्य महाव्रत होता।
चिन्तामणि आतम का हीरा, पाकर पुद्गल खोता॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिए, हम पर अपनी छाँव।
पायें अचौर्य महाव्रत, अतः पड़ें हम पाँव ॥14॥

ॐ ह्रीं चोर-चोरीभयविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

बाल वृद्ध युवती नारी से, कामुक मन को मोड़ा।
मन-वच-तन कृत कारित एवं, अनुमोदन से छोड़ा॥
नारीजन को माता पुत्री, अथवा बहना माना।
ब्रह्मचर्य ये महा महाव्रत, लोक पूज्य पहचाना॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिए, हम पर अपनी छाँव।
ब्रह्मचर्य महाव्रत मिले, अतः पड़ें हम पाँव॥15॥

ॐ ह्रीं दुराचरणभावविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अंतरंग के चौदह परिग्रह, बाहर के दस त्यागी।
संयम ज्ञान शौच उपकरणों, को धारें वैरागी॥
ममताहारी समताधारी, गुरु निर्गन्थ महात्मा।
परिग्रह त्याग महाव्रत ऐसा, तत्त्वज्ञानमय आत्मा॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिए, हम पर अपनी छाँव।
अपरिग्रह महाव्रत मिले, अतः पड़ें हम पाँव॥16॥

ॐ ह्रीं तृष्णादुःखविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्रासुक पथ पर चार हाथ भू, निरख निरख कर दिन में।
जब आवश्यक तब ही चलना, जीव दया भर दिल में॥
बिना प्रयोजन प्रमाद करके, कभी न चलते स्वामी।
ऐसी ईर्या समिति धरे जो, उसको हम प्रणमामि॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिए, हम पर अपनी छाँव।
हमें ईर्या समिति मिले, अतः पड़ें हम पाँव॥17॥

ॐ ह्रीं आवागमनदुर्घटनाविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

निंदा चुगली आत्म प्रशंसा, ऐसी वाणी छोड़ें।
हितमितप्रिय आगममय बोलें, दिल न किसी का तोड़ें॥
अति आवश्यक तब ही मुख से, यों बरसे ज्यों मोती।
ऐसी भाषा समिति धरे जो, उसकी पूजा होती॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिए, हम पर अपनी छाँव।
हमें भाषा समिति मिले, अतः पड़ें हम पाँव॥18॥

ॐ ह्रीं वचन-विवादविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अंतराय बत्तीस टालना, छियालीस दोषों को।
उच्च वंश श्रावक का भोजन, लेना तज दोषों को॥
आतम विधि से सिंह वृत्ति से, धर्म देह रक्षा को।
यही एषणा समिति धार कर, धर्म वृद्धि शिक्षा दो॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिए, हम पर अपनी छाँव।
पले एषणा समिति बस, अतः पड़ें हम पाँव॥19॥

ॐ ह्रीं शक्तिदोषविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पिछी कमण्डल शास्त्र आदि को, रखना और उठाना।
देख शोधकर जीव बचा कर, आवश्यक अपनाना॥
आदान निक्षेपण समिति जो, सावधान हो पाले।
दुनियाँ उसको पलकों पर रख, पलकें उसे झुका ले॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिए, हम पर अपनी छाँव।
हमें समिति चौथी मिले, अतः पड़ें हम पाँव॥20॥

ॐ ह्रीं आलस-प्रमाददोषविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

दूर गूढ़ जो प्रासुक धरती, छिद्र रहित भी होवे।
उस पर मल-मूत्रों का तजना, मर्यादा नहिं खोवे॥
वही कही उत्सर्ग समिति जो, त्रयविध कर्म नशा दे।
करके यों उत्थान मोक्ष में, जल्दी हमें वसा दे॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिए, हम पर अपनी छाँव।
मिले समिति उत्सर्ग झट, अतः पड़ें हम पाँव॥21॥

ॐ ह्रीं आन्तरिकदोषविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अपने मन को राग द्वेष से, सुन लो पूर्ण बचाना।
सिद्ध सरीखे शुद्धातम में, मन को पूर्ण लगाना॥
मनोगुप्ति उसको ही माना, जो बस मुनिजन पालें।
वही शुद्ध उपयोगी मुनि है, उनके गुण हम गालें॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिए, हम पर अपनी छाँव।
मनो गुप्ति हमको मिले, अतः पड़ें हम पाँव॥22॥

ॐ ह्रीं समस्तविधमनोरोगविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

निज वचनों को पूर्ण रूप से, निज-वश में कर डाला।
वचनों का व्यापार रोककर, आतम चित्त सँभाला॥
वचन गुप्ति बस यही कहाती, जिसको मुनिजन धारें।
ऐसे ज्ञानी ध्यानी मुनि के, आओ! पाँव पखारें॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिए, हम पर अपनी छाँव।
वचन गुप्ति हमको मिले, अतः पड़ें हम पाँव॥23॥

ॐ ह्रीं समस्तविधमुखवचनरोगविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अपनी काया पूर्ण रूप से, अपने वश में लाना।
अंगों के व्यापार रोककर, अपनी आतम ध्याना॥
कायगुप्ति यह जिससे लगती, मूरत जैसी काया।
ऐसे निश्चल सुथिर संत को, सबने शीश झुकाया॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिए, हम पर अपनी छाँव।
काय गुप्ति हमको मिले, अतः पड़ें हम पाँव॥24॥

ॐ ह्रीं समस्तविधदेहरोगविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य (घत्ता)

अभिनन्दन स्वामी, मोक्ष विरामी, केवलज्ञानी, जिनवर हो।
हम तुम्हें नमामि, नित प्रणमामि, नाथ हमें भी, तुम वर दो॥
प्रभु-चरण-शरण दो, ज्ञान किरण दो, पूजा का बस, अवसर दो।
अब समाधिमरण दो, जनम मरण को, हरो, हाथ सिर पर धर दो॥
अभिनन्दनप्रभु का करें, नंदन वंदन आज।
दर्शन बस मिलता रहे, रखना इतनी लाज॥

ॐ ह्रीं आधि-व्याधि-उपाधिविनाशनाय समाधिप्राप्तये श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(सोरठा)

अभिनन्दन जिननाथ, मोह नाशकर मोक्ष दें।
अतः विनत हम माथ, मात्र भक्ति का सौख्य दें॥

(लय : भव-वन में जी भर.....)

हे! अभिनन्दन स्वामी जिनवर, हे! वीतराग हे! संन्यासी।
हे! नाथ हितंकर क्षेमंकर, हे! लोक शिखर के अधिवासी॥
हे! दया कृपा करुणा धारी, हो आप स्वयं पूजित जग में।
जिनदेव तुम्हें क्या हम पूजें, बस आन पड़े तेरे पग में॥ 1॥

गुणगान तुम्हारा है ऐसा, ज्यों दीप दिखाना सूरज को।
ज्यों नीर चढ़ाना गंगा को, ज्यों गीत सुनाना आगम को॥
फिर भी इस मानव जीवन में, हम अपना फर्ज निभाते हैं।
भव-भव में कर्ज चढ़ाया जो, वह सारा आज चुकाते हैं॥ 2॥

यह कर्ज निगोद में चुक न सका, क्योंकि वहाँ कुछ ज्ञान ना था।
ना श्रद्धा भी अभिव्यक्त हुई, कुछ भी चारित्र विधान ना था॥
बस जनम-मरण की बाधाएँ हर एक श्वांस में पीड़ाएँ।
इतनी भी जिनको कहने में, अनंत ज्ञानी भी थक जाएँ॥ 3॥

फिर दुर्लभ थावर तन में भी चारित्र भक्ति भी धर न सके।
दुख भूख प्यास के धूप छाँव के, रहे किन्तु तब मर न सके॥
विकलत्रय में दुख घोर सहे पर जिनवर का ना द्वार मिला।
तिर्यंच बने पंचेन्द्रिय तो दुख गम का ही संसार मिला॥ 4॥

तन काटा गया करौतों से, भालों से छेदा भेदा था।
फिर हाय जाल में फँसा हमें, झट बूचड़ खाने भेजा था॥
तब कथा वहाँ की पीड़ा की, ना झेल सके ना बोल सके।

बन मूक वहाँ बस रो-रोकर, अपना चेतन ना तोल सके॥ 5॥

जब नरक वास हम पहुँच पड़े, तो घात परस्पर हुए वहाँ।
गर्मी सर्दी की बाधाएँ, थे मल रक्तों के कुए वहाँ॥
तब तिलतिल में पलपल किलकिल, ना भूख मिटी ना प्यास मिटी।
ना भुक्ति मिली ना भक्ति हुई, आतम बस दुख गम तक सिमटी॥ 6॥

जब देव बने तो संयम की, थोड़ी भी गंध न मिली वहाँ।
बस भोग मिले जिन भोगों में, आतम की कली न खिली वहाँ॥
तब मानव जीवन पाने को, हम तरस पड़े नम बरस पड़े।
फिर आज कहीं, हे! स्वामीजी, जिन द्वार मिला हम हरस पड़े॥ 7॥

मानव भव की क्या व्यथा कथा हे! नाथ तुम्हें हम कह पायें।
दुख सहे गर्भ में सिकुड़ सिकुड़, ना हिल पायें ना डुल पायें॥
नौ माह कटे मल मूत्रों में, उल्टे मटके जैसे लटके।
फिर बिलख-बिलख नर-जन्मों ने, उल्टे पटके तो हम भटके॥ 8॥

बचपन में कुछ न विवेक रहा, तो संयम बिन बहु कष्ट हुए।
यौवन में भोगों में इतने, हम मस्त हुए सब त्रस्त हुए॥
फिर हाय! बुढ़ापा दुखदायी, तन हाथ पाँव कुकरे-कुकरे।
न सुनाई दे न दिखाई दे, दुनियाँ बोले, डुकरी-डुकरे॥ 9॥

ऐसा लगता कि बुढ़ापे में, सब दूर हुए सब रूठ गये।
आधा जीना आधा मरना, क्या सपने सारे टूट गये॥
हम गये जहाँ भी इस जग में दुत्कार मिली फटकार मिली।
चारित्र मिला ना जिनदर्शन, बस पाप भरी सरकार मिली॥ 10॥

दुख दर्द भरी इस दुनियाँ में न सहारा है न किनारा है।
न हमारा है कोई अपना सो तुमको आज पुकारा है॥
चारों गतियों के भ्रमण हरो, दुख दर्द चक्र को नाश करो।
जिन दर्शन जिनचारित्र मिले, प्रभु दान हमें संन्यास करो॥ 11॥

बचपन में माँ की गोद मिले, यौवन में कृपा महात्मा की।
हो पिता लड़कपन के साथी, बूढ़े में सुध परमात्मा की॥
दो बोधि समाधी की धारा, हो जिससे पूरी जिनपूजा।
प्रभु इतना सा उपकार करो, 'सुव्रत' को समझो ना दूजा॥ 12॥
मूरत की महिमा महा, किसने पाया पार।
द्रव्य भावमय भज मिले, विश्व तत्त्व का सार॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय समुच्चयजयमालापूर्णार्घ्यं.....।

आभिनन्दनस्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, अभिनन्दन जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

॥ इति श्री अभिनंदननाथविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

अजितनाथ प्रभु मूल में, चौबीसों भगवान्।
पूर्ण 'चन्देरी' में हुआ, अभिनन्दननाथ विधान॥
दो हजार तेरह मई, सोम बीस तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

टन टनाटन घंटी बाजे, झन-झन बाजे झालरिया।
झूम-झूम के नाँच-नाँच के, भक्त उतारें आरतिया॥

थाल सजाये दीप जलाये, भाव बनाये वंदन के[2]
प्रभु चरणों में आन पड़े हम, भूखे-प्यासे दर्शन के[2]
दर्शन करके बाज उठा मन, जैसे बाजे ढोलकिया[2] ॥ 1 ॥
झूम-झूम के..... ॥

दिशा बदल दो, दशा बदल दो, दो आशीष हमें भगवान्[2]
स्वार्थ छोड़ के दौड़-दौड़ के, हम आये करने गुणगान[2]
तत्त्व ज्ञान का मिले उजाला, चमक उठे निज मूरतिया[2] ॥ 2 ॥
झूम-झूम के..... ॥

ऋद्धि-सिद्धि सुख समृद्धि के, हैं दाता अभिनन्दननाथ[2]
कर्म शत्रु नश्वर माया पर, विजय दिला दो देकर साथ[2]
आत्म ध्यान में 'सुव्रत' डूबे, हटे राह की हर रतिया[2] ॥ 3 ॥
झूम-झूम के..... ॥